# जितना ग्रंथ उतना भय : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

**बीदासर, 1 अप्रेल।**

''जहां एक से दो होते हैं वहां समस्या पैदा होती है। सत्य के अनंत प्रयाय है। एक अक्षर के भी अनंत पर्याय हो जाते हैं। अनंत पर्यायों को दो आंखों से नहीं देखा जा सकता उसके लिए अनंत चक्षु की आवश्यकता होती है। आपस में लड़ाई–झगड़ा भी इसलिए हो रहा है कि व्यक्ति सत्य को दो आंखों से देखना चाहता है।''

उक्त विचार आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवरण में धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि भगवान महावीर द्वारा दिये गये अनेकांत को व्याख्यायित करते हुए कहा कि भगवान महावीर अनंत चक्षु वाले थे इसलिए उन्होंने सत्य को देखा और सत्य का प्रतिपादन किया। व्यवहार में जीने वाला आदमी स्थूल बातों को पकड़ता है और जब निश्चयनय में जाता है तो सत्य बात का पता नहीं चलता। भगवान महावीर ने सबसे बड़ा सत्य आचरण का देखा यानी एक है दार्शनिक सत्य और दूसरा व्यवहार का सत्य। भगवान महावीर इस बात पर ध्यान दिया कि दुनिया में भय बहुत है। भगवान महावीर ने सबसे पहले अभय का प्रतिपादन किया और एक सच्चाई को प्रकट किया। डर नहीं था इसी कारण उन्होंने सत्य को खोज लिया। जहां ग्रंथ है वहां भय है, निर्ग्रंथ अर्थात जहां परिग्रह नहीं होता वहां कोई डर नहीं। भय के कारण बहुत बड़ी मनोकायिक बिमारियां पैदा हो रही है। भय सारा ग्रंथ (परिग्रह) का है अगर व्यक्ति निर्ग्रंथ बन जाए तो भय नहीं हो सकता।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि जो व्यक्ति संग्रह रखता है वह अभय हो नहीं सकता। हमेशा उसमें भय बना रहता है, भीतर में भय का तनाव बना रहता है वह तनाव अनेक समस्याएं पैदा करता है। एक सच्चाई है, दूसरी सच्चाई यह है कि कोई भी गृहस्थ परिग्रह से मुक्त हो नहीं सकता। गृहस्थ जो परिग्रह से मुक्त हो नहीं सकता उसके लिए भी महावीर अनंत चक्षु वाले थे उन्होंने इसका भी समाधान दिया कि जो गृहस्थ है परिग्रह को छोड़ नहीं सकता पर वह सीमा करना सीखे, संयम करना सीखे। वर्तमान की जो समस्याएं है उन समस्याओं के समाधान का कोई सूत्र खोजा जाए तो वह है सीमाकरण अर्था संयम करना है कि व्यक्ति संयम करे, ज्यादा संग्रह न करे। इतना संग्रह न करे कि एक जगह पहाड़ बन जाए तो दूसरी तरफ गहरा गढ्ढा बन जाए। व्यक्ति अधिक से अधिक बैंको से ऋण ले और फिर चुकाये नहीं इसी मनोवृति के कारण आज विश्व को मंदी के दौर से गुजरना पड़ रहा है। इतना उपभोग मत करो कि एक आदमी की टेबल पर सौ आईटम मिल जाए और दूसरे आदमी को पूरी खाने को रोटी भी न मिले। भगवान महावीर एक मध्यम मार्ग दिया श्रावक की आचार संहिता दी, उसमें संयम को महत्त्व दिया, जो सभी के लिए उपयोगी है और वर्तमान की समस्या का समाधान भी है।

आचार्यश्री ने आगे यह भी फरमाया कि मैं उस दर्शन को आकाशीय दर्शन मानता हूं जिसका जीवन व्यवहार में कोई उपयोग नहीं है। जो धरती पर नहीं उतरता। केवल वाचिक व्यायाम उससे लाभ नहीं होता। महावीर ने चरित्र पर भी बल दिया। दृष्टिकोण, ज्ञान और

चरित्र ये दर्शन चरित्र में फलित होना चाहिए। तीन सौ पैंसठ दिन महावीर की इस वाणी को याद रखें कि जितना ग्रंथ उतना भय। जितना निग्रंथ उतना अभय इसको साक्षात्मकार कर लेता है तो उसके लिए सदा महावीज जयंती जैसा ही अवसर रहता है। महावीर ने अध्यात्म दोषों का त्याग किया था। क्रोध, अभिमान, माया और लोभ ये चार अध्यात्म दोष हैं जो भीतर के दोष हैं। आज आवेश बहुत बढ़ रहा है वर्तमान की दो बड़ी समस्याएं है एक मन की चंचलता और दूसरा आवेश, क्रोध, अहंकार के कषाय समस्या पैदा करने वाले हैं भगवान महावीर ने कषायों से मुक्ति पा ली थी। अगर सीमा करने की बात, परिमाण करने की बात समझ में आ जाए तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है तो हम महावीर की जयंती इन दो शब्दों के संदर्भ में मनाएं उसका व्यवहार करें तो हमारी चिंतन की कार्य की सार्थकता होगी।

---

## निःशुल्क कैंसर चिकित्सा शिविर में 138 रोगी लाभान्वित

**बीदासर, 1 अप्रैल।**

स्थानीय तेरापंथ भवन में स्थित पूनम भवन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल एवं कैंसर केयर (महिला प्रकोष्ठ) के तथा भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र जयपुर के तत्वावधान में नीरा बैद फाउण्डेशन मेमोरियल ट्रस्ट जयपुर के आर्थिक सौजन्य से महिला मण्डल बीदासर द्वारा बुधवार को एक दिवसीय निःशुल्क विशाल कैंसर जांच निदान एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. राकेश सी एण्डले, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. वर्षा ओझा, कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. राजेश पसरिचा, डॉ. धमेन्द्र, डॉ. दास गुप्ता, रेडियोलोजिस्ट डॉ. एस.एस. कानोड़िया ने रोगियों 138 रोगियों की जांच कर निःशुल्क दवाइयां वितरीत की।

शिविर प्रभारी डॉ. एण्डले ने बताया कि कैंसर के संभावित रोगियों का चयन किया गया है, उन सभी का ईलाज भगवान महावीर कैंसर चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र जयपुर में निःशुल्क किया जायेगा। शिविर में तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा सोभागदेवी बैद, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा पुष्पादेवी बैंगानी, स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा शांतिदेवी बांठिया, सरोजदेवी दूगड़, संपतदेवी बैद, शांतिदेवी बैंगानी, सोभागदेवी सेठिया सहित महिला मण्डल एवं कन्या मण्डल की अनेक कार्यकर्त्ताओं ने शिविर को सफल बनाने के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर का उद्घाटन युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगलपाठ के साथ किया।

**– अषोक सियोल**